3

# पाप की समस्या के समाधान

## ( 1 यूहन्ना 1:5–2:2 )

### ढांचे की भीतर निरंतर शुद्धि देता रहता है ...।

मसीही बनने पर जीवन की समस्याओं से पीछा नहीं छूट जाता। मसीही लोग बीमार होते हैं और मरते हैं। उनकी नौकरी छूट जाती है या उनका कारोबार ठप्प हो जाता है। निजी सम्बन्धों में उन्हें निराशा मिलती है। उनकी भी पारिवारिक समस्याएं होती हैं। परन्तु मसीही व्यक्ति की सबसे बड़ी समस्या उसके स्वास्थ्य की समस्या, आर्थिक समस्या या पारिवारिक समस्या नहीं है। यह पाप की समस्या है।

मसीही व्यक्ति को पाप से उद्धार मिला है। यीशु में विश्वास करने (यूहन्ना 8:24), अपने पापों से मन फिराने (लूका 13:3), अपने विश्वास का अंगीकार करने (1 तीमुथियस 6:12), और मसीह में बपतिस्मा लेने (गलातियों 3:27) पर उसे अपने पापों की क्षमा मिली है (प्रेरितों 2:38)। यहीं पर उसे नया जन्म मिला यानी उसे प्रभु की कलीसिया में मिलाया गया यानी उसका उद्धार हुआ।

इसके बावजूद मसीही व्यक्ति पाप करता है! चाहे उसे पाप से उद्धार मिला था, परन्तु उसका उद्धार उसे पाप करने से दूर नहीं रखता। पाप की समस्या लगातार उसे सताती रहती है। ''पाप की समस्या'' का समाधान वह तीनों में से एक ढंग को करने की कोशिश करते हैं: (1) वह निर्णय ले सकता है कि वह अभी भी पाप करता है इसलिए उसका उद्धार हुआ ही नहीं। वह संसार में या तो वापस जा सकता है या दोबारा बपतिस्मा लेकर फिर उसे उद्धार की तलाश कर सकता है। (2) वह यह निर्णय ले सकता है कि वह बिना पाप किए रह नहीं सकता इस कारण उसे मसीही बनने के ही विचार को ही त्याग देना चाहिए। वह अपने आप को इतना कमज़ोर, इतना निकम्मा समझकर ''निकल जाता जाए'' गा कि वह परमेश्वर की संतान होने के योग्य नहीं है। (3) वह निर्णय ले सकता है कि वह पाप करना तो छोड़ेगा नहीं इसलिए उसे इसकी चिंता छोड़कर आनन्द करना चाहिए। इस प्रकार वह पाप में जीवन बिताते रहकर मसीही बना रहेगा।

इनमें से कोई भी वास्तविक समाधान नहीं है। परन्तु बाइबल सहायता उपलब्ध कराती है। विशेषकर 1 यूहन्ना 2:1, 2 में इसके संदर्भ के साथ पाप की समस्या का समाधान यूहन्ना द्वारा दिया जाता है। वह पाप और मसीही के सम्बन्ध में हर बातें बताता है।

### मसीही लोगों को पाप नहीं करना चाहिए

यूहन्ना कहता है, ''हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि तुम पाप न करो'' (1 यूहन्ना 2:1)। (1 यूहन्ना 2:15, 16; गलातियों 5:19–22; रोमियों 6:12–14 भी देखें।)

यूहन्ना के पाठकों को इस संदेश को समझने की आवश्यकता थी। स्पष्टतया उनमें से कुछ ने एक विधर्म को स्वीकार कर लिया था जिसके आरम्भिक चरणों में नॉस्टिकवाद के रूप में जाना जाता था। नॉस्टिकवाद के कई रूप थे। परन्तु सब में एक बात सामान्य थी कि उनका मानना था कि शरीर और इससे जुड़ी हर बात बुरी है; परन्तु आत्मा और इससे जुड़ी हर बात अच्छी है।

धर्मशास्त्रीय रूप में इससे नॉस्टिकवादियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि यीशु देह में परमेश्वर नहीं हो सकता था। आत्मा होने के कारण परमेश्वर इतना, सचमुच में इतना अच्छा है कि वह पाप से भरी देह में यानी बुराई में वास नहीं कर सकता। इस कारण वे कहते होंगे कि मसीह केवल शरीर *दिखाई दिया*। (देखें 1 यूहन्ना 4:2, 3.)

नैतिक रूप में ऐसा ही विश्वास नॉस्टिकवादियों को दो विपरीत दृष्टिकोणों तक ले गया। कुछ यह तक देते थे कि शरीर बुराई है इसलिए मसीही व्यक्ति का काम शरीर का इनकार करना या यहां तक कि इसे बिगाड़ना है। ये लोग अपने आप को बर्फ़ीले मौसम में नंगे रखते, भूखा रहते या पत्थरों से बेधते थे। दूसरे चरम पर कुछ लोग ऐसे थे जो यह बहस करते थे कि शरीर वास्तव में उस आत्मा को जो उस शरीर में रहती है किसी प्रकार प्रभावित नहीं कर सकता। सो उनका मानना था कि मसीही व्यक्ति को जैसे चाहे वैसे जीना चाहिए यानी शराबी, पेटू, या व्यभिचारी बनकर और इससे किसी को दुख नहीं होता। आखिर आत्मा तो परमेश्वर के इतना निकट है कि शरीर को चाहे जो भी हो जाए, वह अच्छी ही रहती है।

लगता है कि यूहन्ना के कुछ पाठक इस दृष्टिकोण को मानने लगे थे क्योंकि यूहन्ना लिखता है: ''... परमेश्वर ज्योति है: और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं: और सत्य पर नहीं चलते'' (1 यूहन्ना 1:5, 6)।

वे कहते होंगे, ''हमारी परमेश्वर के साथ सहभागिता है। हमारी अनैतिकता से वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि हमारी आत्माएं तो शुद्ध हैं।'' यूहन्ना ने उत्तर दिया: ''तुम जीता जागता झूठ हो। जब तक तुम्हारा जीवन उसके स्वभाव और उसके वचन के विपरीत है जब तक परमेश्वर के साथ तुम्हारी सहभागिता नहीं हो सकती। यदि तुम्हारे काम शुद्ध नहीं हैं तो तुम्हारी आत्मा शुद्ध नहीं है।''

शायद हमें भी इस संदेश की आवश्यकता है कि हम पाप न करें! कुछ मसीही लोग जानते हैं कि वे पाप करते हैं परन्तु वे अपने पापों पर कंधे उचकाते हुए कहते हैं: ''मैं जानता हूं कि मैं जब गुस्से में होता हूं तो मेरे मुंह से गलत निकल जाता है, परन्तु क्या करूं मैं ऐसा ही हूं''; ''हां, मैं काफ़ी आपे से बाहर हो जाता हूं और कई बार मैं उसी को ठोक देता हूं जिसने मुझे क्रोध दिलाया हो, परन्तु तुम जानते हो कि हम जल्दी गुस्सा करने वाले लोग कैसे होते हैं!'' जब मसीही लोग ऐसी बातें करते हैं तो वे कह रहे होते हैं कि वे पाप करते हैं और इसे जानते हैं, परन्तु पाप करना छोड़ने की उनकी कोई मंशा नहीं है। उन मसीही लोगों को यह समझ लेना आवश्यक है कि *परमेश्वर नहीं चाहता कि वे पाप करें!*

1 यूहन्ना 1:5, 6 भी बताता है कि मसीही होने के नाते हमें पाप क्यों नहीं करना चाहिए। यूहन्ना कहता है कि हमारे लिए जिनकी परमेश्वर के साथ सहभागिता है, जो ज्योति है, अंधकार या पाप में चलना सही नहीं है।

हम उपयुक्त व्यवहार की अवधारणा को समझ सकते हैं। कल्पना करें कि देश का राष्ट्रपति किसी बाहरी देश के प्रमुख के साथ आ रहा है। राष्ट्रपति का जहाज किसी ठहराव पर रुकता है। लाइट जहाज़ के दरवाजे पर पड़ती है; सीढ़ियां दरवाजे तक जाती हैं; बैंड बजता है ''प्रधान की जय हो।'' दरवाजा खुलता है और राष्ट्रपति बाहर आता है, राष्ट्रपति उछलकर जंगले से नीचे आता, कुछ पहियों को घूमाता और हास्यसपद ढंग से विदेशी अतिथि के कदमों में गिरकर कहता है, ''नमस्कार!'' वास्तविकता तो यह है कि हम ऐसे कार्य करने की कल्पना राष्ट्रपतियों से नहीं कर सकते। ऐसा व्यवहार उस पद पर बैठे व्यक्ति के लिए उपयुक्त नहीं है।

जब कोई बच्चा कलीसिया में आता और अंगूठा चूसता है, या अपना कंबल नाक में घुसेड़ता है और आराधना के दौरान ज़ोर ज़ोर चिल्लाने लगता है तो हम इस पर ध्यान नहीं देते। आखिर बच्चों से ऐसे ही व्यवहार की उम्मीद की जाती है। परन्तु यदि कोई पचास साल का आदमी अंगूठा मुंह में डाले, नाक में कंबल घुसड़ते हुए ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगे तो हम ध्यान देंगे, ''यह तो अलग ही है; कुछ गड़बड़ है।'' बड़े लोग ऐसा काम नहीं करते। बच्चे के लिए जो व्यवहार उपयुक्त है वह बड़े के लिए उपयुक्त नहीं है।

यूहन्ना यहां कुछ ऐसा ही कह रहा है कि मसीही लोगों को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि जिसकी परमेश्वर के साथ सहभागिता है उसके लिए पाप करना उपयुक्त नहीं है! यदि आप दूसरों को कारण देने की तलाश में हैं कि आप उनके साथ पाप करने में शामिल क्यों नहीं होते तो उसका कारण यह है: *मसीही लोग बस ऐसे काम नहीं करते!* पाप मसीही व्यक्ति के व्यवहार से मेल *नहीं* खाता।

## मसीही लोगों को पाप तो नहीं करना चाहिए पर वे करते हैं

यूहन्ना कहता है, ''मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूं कि तुम पाप न करो और *यदि कोई पाप करे,* ...।'' यह एक वास्विक सम्भावना थी कि मसीही व्यक्ति पाप करे। यूहन्ना इस संदर्भ में इससे भी कठिन भाषा का इस्तेमाल करता है: ''यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं, और हम में से सत्य नहीं। ... यदि हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं'' (1 यूहन्ना 1:8-10)। स्पष्टतया मसीही लोग पाप कर सकते हैं और करते हैं। मसीही और गैर मसीही लोगों में अन्तर यह *नहीं* है कि गैर मसीही लोग पाप हैं और मसीही लोग नहीं। बल्कि यह अन्तर यह है कि मसीही लोग वे पापी हैं जिनका उद्धार अनुग्रह से हुआ है, और गैर मसीही लोग पापी ही हैं!

केवल यह जान लेना कि मसीही लोग पाप कर सकते हैं और इसके बावजूद मसीही बने रह सकते हैं चेलों के लिए सहायक होगा। यदि उन्हें पहले से चेतावनी दी जाए कि मसीही लोग पाप कर सकते हैं तो पाप द्वारा उनके ऊपर विजय पाने पर वे निराश नहीं होंगे। मसीही के रूप में, क्या आप पाप करते हैं? अन्य हर मसीही भी करता है! केवल इसलिए कि आपने पाप किया है पीछे न हटें। पाप करना हमें अनिवार्य रूप में दोषी नहीं बनाता पर पीछे हट जाना बनाता है।

परन्तु यह पता चलने पर कि हम पाप करते हैं एक समस्या खड़ी कर देता है। क्या यह कहने में कुछ विरोधाभास नहीं है कि हमें पाप नहीं करना चाहिए, पर हम करते हैं? यदि हमें पाप नहीं करना चाहिए और हम तब भी करते हैं तो हम कितना पाप करके ''भाग'' सकते हैं

कि फिर भी अनन्तकाल के लिए उद्धार पाएं ? यूहन्ना दो अन्य बल्कि कठिन वचनों में 1 यूहन्ना में इस समस्या का समाधान करने में सहायता करता है:

> जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है, और न उस को जाना है। हे बालको, ... जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। ... जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है: और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है (1 यूहन्ना 3:6-9)।

> हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता (1 यूहन्ना 5:18)।

क्या यूहन्ना के कहने का अर्थ यह है कि मसीही व्यक्ति के लिए पाप करना असम्भव है ? स्पष्टतया नहीं ? फिर तो वह 1 यूहन्ना 1:8, 10; 2:1 में कही अपनी ही बात का विरोध करता। तो फिर इसका क्या अर्थ है ?

इस प्रश्न का उत्तर मूल भाषा में क्रियाओं के काल में मिलता है। यूनानी में ये क्रियाएं वर्तमान काल में हैं जिसमें निरन्तर क्रिया करने का विचार पाया जाता है। उनका अनुवाद "... करता रहता" हो सकता है। मूल में यूहन्ना यह कहता है:

> कोई भी जो उसमें बना रहता है पाप करना जारी नहीं रखता ...।
> वह जो पाप करना जारी रखता है, शैतान से है ...।
> जो परमेश्वर से जन्मा है वह पाप करना जारी नहीं रखता ...।
> वह पाप करना जारी नहीं रख सकता क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है ...।
> परमेश्वर से जन्मा कोई व्यक्ति पाप करना जारी नहीं रखता ...।

सो यूहन्ना बता रहा है कि मसीही लोग पाप करते हैं, यह सही है *परन्तु* वे पाप करते नहीं रहते! वे पाप करने के आदी नहीं हैं। पाप उनके जीवन की मुख्य बात या उन्हें चलाने वाला नियम या मुख्य प्रवृति नहीं है। वह मसीही व्यक्ति का चित्र ऐसे व्यक्ति के रूप में बनाता है जो पाप न करने कोशिश करता है, परन्तु जो कभी कभी पाप के भ्रम में फंस जाता है। आम तौर पर, आदत के अनुसार वह परमेश्वर के मार्ग में चलता है, परन्तु कभी कभी ठोकर खाकर गिर जाता है। उसके जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य धार्मिकता है। पर कभी कभी वह पाप के आगे घुटने टेक देता है।

इसे समझाने के लिए जीत रहे धावक या टीम पर विचार करें कि वह क्या करता है: बड़ा गोल्फ़ खिलाड़ी हर शॉट सीधा नहीं मारता, हर गढहे के आस पास (गढहे से काफ़ी कम) मारता है या हर टूर्नामेंट जीतता नहीं है। परन्तु वह अधिकतर टूर्नामेंट से बेहतर करता है और अधिकतर जीतता है। बेसबॉल में सबसे अच्छा हिटर हर बैट पर हिट नहीं मारता। वास्तव में प्लेट तक जाने में वह रह बार हिट भी नहीं मारता। कई बार तो वह आउट हो जाता है। परन्तु वह इतनी हिटें लेता है कि उसके प्लेट तक आने पर आपको उम्मीद होती है कि कुछ होगा ...। बड़ी से बड़ी

फुटबॉल टीम हर बार गोल नहीं करती। या हर बार पहले उनके पास बॉल नहीं होती परन्तु यह गेम जीतने में पूरी कोशिश करती है।

मसीही व्यक्ति के साथ भी ऐसा ही है। वह हर पाप पर जय नहीं पा लेता परन्तु हारने से अधिक वह जीतता है। कभी कभी परीक्षा के साथ युद्ध हार जाने के बावजूद वह इसे अपनी आदत नहीं बनाता। उसके जीवन की प्रवृति या दिशा पाप करना नहीं बल्कि धार्मिकता है। वह कभी कभी आऊट हो सकता है पर अधिकतर ''गोल करता'' ही है।

मसीही व्यक्ति को यह समझने की आवश्यकता है कि उसे पाप नहीं करना चाहिए, पर वह करेगा। जब वह पाप करता है तो निराश होने का कोई कारण नहीं है, बल्कि उठ कर धार्मिक जीवन जीने की कोशिश फिर से करने का कारण है।

## जब मसीही लोग पाप करते हैं, तो परमेश्वर उपचार देता है

यूहन्ना कहता है: ''... यदि कोई पाप करे, *तो पिता के पास हमारा एक सहायक है; अर्थात धर्मी यीशु मसीह; और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है,* और केवल हमारे ही नहीं वरन सारे जगत के पापों का भी'' (1 यूहन्ना 2:1, 2)।

यूहन्ना कहता है कि हमें पाप नहीं करना चाहिए, पर हम फिर भी करते हैं। यह बुरी खबर है। फिर अच्छी खबर आती है कि परमेश्वर ने हमारे लिए उपाय किया है कि जब हम पाप करते हैं तो वह हमें क्षमा करे! यह संदेश हमें बताता है कि चाहे मैं पापी हूं, फिर भी मुझे क्षमा किया जा सकता है और मैं फिर भी स्वर्ग में जा सकता हूं!

यह क्षमा किस प्रकार से पाई जाती है? परमेश्वर का उपाय केवल यीशु मसीह है। वह हमारा सहायक है जो पिता के पास हमारी सफाई देता है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित अर्थात ''वह माध्यम है जहां पाप को ढांपकर क्षमा किया जाता'' है।[1] उसके लहू के द्वारा हमारे पाप क्षमा किए जाते हैं (1 यूहन्ना 1:7)।

तो फिर किस आधार पर हमें क्षमा और अनन्त उद्धार की आशा है? अपने भीतर पाई जाने वाली भलाई के आधार पर? अपने भले कामों के आधार पर? मसीही जीवन पूर्ण ढंग से जीने के आधार पर? नहीं! बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह और मसीह के लहू के आधार पर! हमें क्षमा इसलिए नहीं किया जाता कि हम ने परमेश्वर के लिए कुछ किया है बल्कि इसलिए किया जाता है कि परमेश्वर ने हमारे लिए कुछ किया है!

## अपने पापों के लिए परमेश्वर के उपचार को पाने के लिए मसीही लोगों के लिए कुछ करना आवश्यक है

यूहन्ना यह भी बताता है कि मसीही लोगों को मसीह के द्वारा मिलने वाली परमेश्वर की क्षमा सशर्त है। उस क्षमा को पाने के लिए मसीही लोगों को कुछ करना आवश्यक है।

हमें इस पर चकित नहीं होना चाहिए। पहले तो हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है, परन्तु केवल तभी जब हम क्षमा की शर्तों को पूरा करके उस अनुग्रह को ग्रहण करते हैं यानी जब हम विश्वास करके, अंगीकार करते, मन फिराते और बपतिस्मा लेते हैं। इसलिए यह बेतुका नहीं है कि हमें मसीह के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाते रहने के लिए कुछ करना चाहिए।

परन्तु क्षमा पाने के लिए परमेश्वर मसीह लोगों से क्या चाहता है? उद्धार पाए हुए रहने के लिए हम क्या करें? इस शीर्षक में इस्तेमाल के लिए मैंने दो तीन बातों पर विचार करने की कोशिश की, परन्तु अन्त में निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर हम से तीन या चार नहीं बल्कि केवल *एक ही बात* चाहता है! 1 यूहन्ना 1:7 में यूहन्ना हमें बताता है कि वह *एक बात* क्या है। मसीही व्यक्ति के लिए अपने पापों से शुद्ध होने के लिए आवश्यक *एक बात* ''ज्योति में चलना'' है!

पर कोई आपत्ति करता है: ''मन फिराव का क्या हुआ, क्या उसकी आवश्यकता नहीं?'' हां, है। मसीही व्यक्ति के लिए अपने पापों से मन फिराना आवश्यक है (प्रेरितों 8:22)। *परन्तु यदि ज्योति में चल रहा है तो वह लगातार मन फिरा रहा है।* बेशक इस संदर्भ में यूहन्ना कहता है, ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1:9)। *पर यदि कोई मसीही ज्योति में चल रहा है, तो वह उन लोगों में जिनकी उसे चिंता है अपने पापां का अंगीकार लगातार कर रहा होगा।* ''प्रार्थना का क्या हुआ? क्या मसीही व्यक्ति को क्षमा के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं?'' बेशक है (प्रेरितों 8:22)। *परन्तु मसीही व्यक्ति जो ज्योति में चल रहा है निरन्तर क्षमा के लिए प्रार्थना कर रहा होगा।* इसलिए ''ज्योति में चलना'' में मन फिराना, पाप को मान लेना और क्षमा के लिए प्रार्थना करना शामिल होगा। इस कारण मसीही व्यक्ति के रूप में क्षमा पाने के लिए किए जाने के लिए तीन बातें नहीं हैं। केवल एक ही बात आवश्यक है ''ज्योति में चलना।''

परन्तु ''ज्योति में चलना'' का क्या अर्थ है? इसका अर्थ ''पाप रहित जीवन'' बिताना *नहीं* है। यदि इसका अर्थ ''पाप रहित जीवन बिताना'' होता तो यूहन्ना ने कहना था, ''यदि हम पाप रहित जीवन बिताते हैं, तो यीशु का लहू हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है।'' परन्तु यदि हम पाप रहित जीवन बिता रहे होते, तो हमारे अन्दर कोई पाप न होता जिसके लिए क्षमा मांगने की आवश्यकता पड़ती! इसलिए ''ज्योति में चलना'' का अर्थ पाप रहित जीवन बिताना *नहीं* हो सकता।

तो फिर इसका क्या अर्थ है? मुझे लगता है कि इसका अर्थ केवल परमेश्वर के वचन की रौशनी के अनुसार जीवन बिताने की *ईमानदार कोशिश करना* हो सकता है।

''ईमानदार कोशिश करना'' ज्योति में चलने के लिए मुख्य बात है। मसीही व्यक्ति पाप रहित जीवन नहीं बिताता, परन्तु अपनी ही परिस्थितियों में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की पूरी कोशिश करते हुए वह प्रयास करता रहता है। कई बार वह ठोकर खाता है, परन्तु वह उसी लक्ष्य को पाने के लिए काम करता रहता है। यदि वह ऐसा करता है तो हमारा मानना है कि परमेश्वर उसे ''ज्योति में चलते हुए'' के रूप में मान लेता है।

यदि हम ''ज्योति में चल रहे'' हैं तो हमें यह प्रतिज्ञा मिली है: ''उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब प्रकार के पापों से शुद्ध करता है।'' यहां फिर से क्रिया के वर्तमान काल का इस्तेमाल हुआ है यानी कार्य किए जाने के निरन्तर पहलू पर ज़ोर दिया गया है। हम इसका अनुवाद इस प्रकार से कर सकते है: ''यदि हम ज्योति में चलना जारी रखते हैं, अर्थात एक दूसरे के साथ सहभागिता करना जारी रखते हैं, तो यीशु का लहू हमें लगातार हमारे हर पाप से शुद्ध करता रहता है।'' मसीही होने के नाते हम ज्योति में चलते हैं यानी मसीह के शुद्ध करने वाले लहू के फव्वारे के नीचे चलते रहते हैं! जैसे ही हम पाप करते हैं, यीशु का लहू में शुद्ध कर देता है और

परमेश्वर हमें क्षमा कर देता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि यदि मैं ईमानदारी से परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने की कोशश करने वाला मसीही हूं, तो मुझे चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि किसी दिन यदि मेरे मन में बुरा विचार आया और मुझे हार्ट अटैक हुआ और मैं क्षमा के लिए प्रार्थना करने से पहले मन गया तो पाप के लिए प्रार्थना न किए जाने के कारण मैं नरक में चला जाऊंगा! बल्कि यह जानकर कि उसकी आज्ञा मानने की कोशिश करते रहने के कारण, मैं निरन्तर आनन्द कर सकता हूं कि यीशु मसीह मेरे पापों को लगातार क्षमा कर रहा है और मैं यह पक्का जान सकता हूं कि मैं स्वर्ग में ही जा रहा हूं!

## सारांश

एक प्रश्न अभी रहता है कि क्या आप परमेश्वर के ढंग से परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने की ईमानदार कोशिश करते हुए ज्योति में चल रहे हैं? यदि मैं आप को अच्छी तरह से जानता हूं तो मुझे लगता है कि मैं बता सकता था कि आप ज्योति में चल रहे हैं या नहीं, कम से कम मुझे यह लगता है कि मसीही लोगों को बाइबल पढ़ने या प्रार्थना करने में कोई रूची नहीं होती, जब वे आराधना में लगातार नहीं जाते, जब वे सांसारिक गतिविधियों में भाग लेने लगते हैं, तो वे परमेश्वर के लिए जीने के लिए ईमानदारी से हर कोशिश *नहीं* कर रहे होते। परन्तु आप के मामले में मेरा निर्णय गलत हो सकता है।

दूसरी ओर, यदि मुझे यह पता नहीं भी है कि आप ज्योति में चल रहे हैं या नहीं, पर आप *तो जानते हैं, या नहीं? आप* जानते हैं कि आप परमेश्वर के वचन के अनुसार रहने के लिए ईमानदार कोशिश कर रहे हैं या नहीं। आप दूसरों को मूर्ख बना सकते हैं पर शायद आप अपने आप को मूर्ख नहीं बना रहे।

कोई और आपको जानता है। *परमेश्वर* जानता है कि आप सचमुच में उसके पीछे ईमानदारी से चलने के लिए ज्योति में चल रहे हैं या नहीं। आप दूसरों को मूर्ख बना सकते हैं; आप अपने आप को भी मूर्ख बना सकते हैं। पर आप परमेश्वर को मूर्ख नहीं बना सकते। वह आपके दिल को जानता है और जानता है कि उसके वचन के अनुसार रहने की आपकी मंशा क्या है। वास्तविक प्रश्न यह है कि परमेश्वर क्या जानता है? परमेश्वर आपको कैसे देखता है?

---

टिप्पणी

[1]डब्ल्यू ई. वाइन, *ऐन एक्पोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टेस्टामेंट वड्र्स,* अंक 3 (ओल्ड टैप्पण, न्यू जर्सी: फ्लेमिंग एच. रेवल, 1966 रिप्रिंट), 224.